Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.27
https://www.srjis.com/issues_data/223
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL OCT-NOV 2023, Vol-11/60

बौद्ध परिपथ पर स्थित बौद्ध केन्द्र कुशीनगर (उत्तर-प्रदेश) का भौगोलिक अध्ययन

नवीन प्रजापति

शोध छात्र

भूगोल विभाग, मदन मोहन मालवीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

भाटपार रानी, देवरिया

(दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर)

Paper Received On: 25 October 2023

Peer Reviewed On: 30 November 2023

Published On: 01 December 2023

Abstract

बौद्ध धर्म में बौद्ध परिपथ का सांस्कृतिक एवं भौगोलिक महत्व है। साथ ही पर्यटन उद्योग के रूप में बौद्ध परिपथ का आर्थिक महत्व है। इस अध्ययन में कुशीनगर में स्थित बौद्ध केन्द्र बौद्ध परिपथ का एक धार्मिक स्थल है। जो भगवान बुद्ध का महापरिनिर्वाण स्थल है। प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितियक स्त्रोतो के माध्यम से संकलन किया गया है। प्रथमिक स्त्रोत के द्वारा प्रत्यक्ष सर्वेक्षण करके विश्लेषणात्मक विधि से व्याख्या किया गया है। प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह कहाँ जा सकता है कि उत्तर-प्रदेश में कुशीनगर बौद्ध स्थल का भौगोलिक एवं सुविकसीत विकास की आवश्यकता है। इसके लिए निरन्तर सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों तथा पर्यटन विभाग द्वारा प्रयासरत है। भविष्य में ऐसी संभावना है, कि इस पर्यटन केंद्र का भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक महत्व सूविकसीत अवस्था में होगा।

परिचय:-

भारत (उत्तर प्रदेश) में बौद्ध विरासत स्थलों को पर्यटन विकास के लिए उचित ध्यान कर रहा है, जिसमें बौद्ध परिपथ को बढ़ावा देने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। चार सबसे पवित्र स्थलों में अर्थात बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर और लुंबिनी सहित आठ स्थानो को कवर करने वाला एक बौद्ध परिपथ, बौद्ध तीर्थ यात्रियों के लिए आध्यात्मिक और धार्मिक कारणो से लोकप्रिय है ।

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

बौद्ध परिपथ एक मार्ग है, जो बुद्ध के पद चिन्हों पर चलता है। यह नेपाल के लुंबिनी से शुरू होता है, जहाँ भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था। भारत के बिहार राज्य (बोधगया) से होता हुआ, जहाँ उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई तथा उत्तर प्रदेश के सारनाथ जहाँ इन्होंने अपना पहला उपदेश दिया था और कुशीनगर में महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ था, तक बौद्ध परिपथ मार्ग का विस्तार है। कुशीनगर बौद्ध परिपथ का द्वितीय प्रमुख केंद्र है, जिसमें लुंबिनी, सारनाथ और गया जैसे तीर्थ स्थल शामिल हैं। भारत में बौद्ध संस्कृत का विकास 12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान केंद्र सरकार ने स्वीकृति दी थी। जिससे भारत के विभिन्न राज्यों में स्थित बौद्ध केन्द्रों के साथ अन्य धार्मिक केन्द्रों को सड़क के माध्यम से एक दूसरे से जोड़ा जा सके, जिससे कि पर्यटन उद्योग को विकसित किया जा सके। जो बौद्ध परिपथ के विकास से बौद्ध कालीन स्थलों का विकास किया जा सके।

अध्ययन क्षेत्र:-

कुशीनगर उत्तर प्रदेश राज्य के उत्तरी पूर्वी सीमांत क्षेत्र में स्थित एक जिला एवं ऐतिहासिक स्थल भी है। इसकी भौगोलिक अवस्थित 26030′ उत्तरी अक्षांश से 27018′ उत्तरी अक्षांश तथा 83029′ पूर्वी देशांतर से 84026′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। इसकी उत्तरी सीमा से महाराजगंज पश्चिमी सीमा गोरखपुर जिले के साथ लगती है, पूर्वी सीमा बिहार राज्य के गोपालगंज एवं दक्षिण में देवरिया जिले से घिरा हुआ है। इस जिले में बूढ़ी गंडक एवं छोटी गंडक प्रमुख नदियां हैं। जो उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर प्रवाहित होती है। कुशीनगर जो उत्तर प्रदेश में स्थित होने के साथ हिमालय के तराई क्षेत्र में स्थित है। यहाँ की जलवायु पर्यटन के लिए अनुकूल है। यह क्षेत्र हर मौसम में पर्यटन के लिए अनुकूल रहता है। मैदानी क्षेत्र में होते हुए भी यह बौद्ध केंद्र प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है यहाँ का बौद्ध स्थल मनोरम दृश्य को प्रकट करता हैं, जिससे पर्यटक इस भौगोलिक प्रदेश की विविधता और सुंदरता को देखने की लालसा पर्यटकों को खींच लाती है।

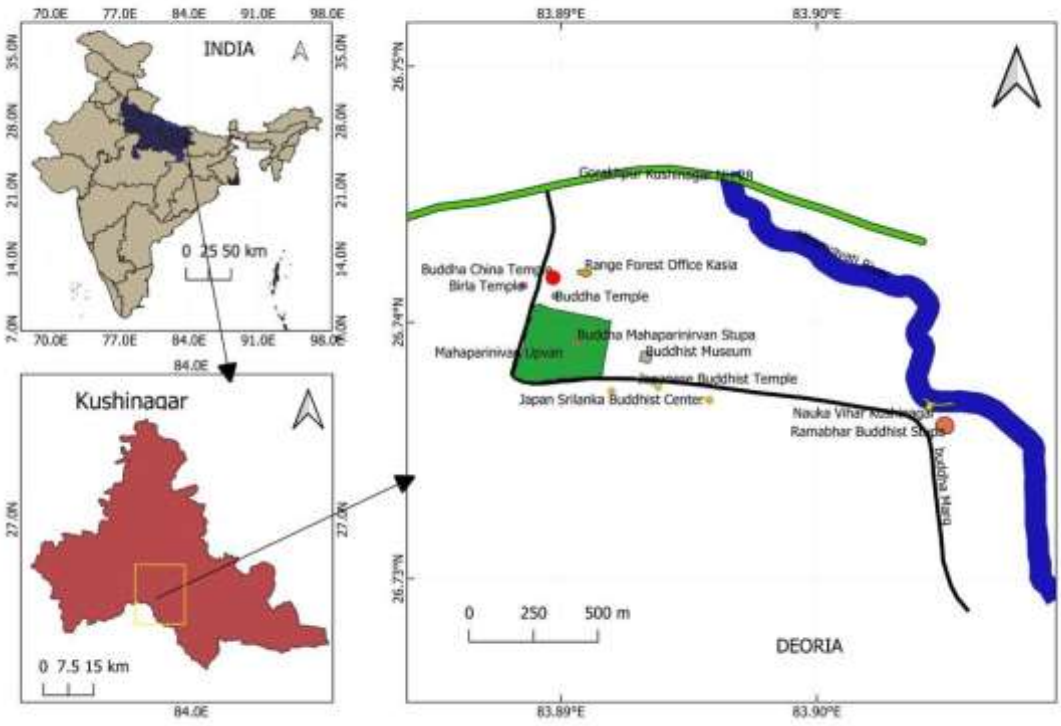

चित्र: अध्ययन क्षेत्र की स्थिति

देश और विदेश के पर्यटक एक बड़ी संख्या में इस स्थल पर पर्यटन के रूप में भ्रमण के लिए आते है। यहां भगवान बुद्ध से संबंधित कई ऐतिहासिक स्थलों के कारण बौद्धिज्म पर्यटको को आकर्षित करता है।

बौद्ध साहित्य में कुशीनगर का विशद वर्णन मिलता है। इसमें कुशीनगर के साथ कुशीनारा, कुशीनगरी और कुशीग्राम प्रभृति अन्य नामो का उल्लेख है। बुद्ध काल के पूर्व में यह कुशावती के नाम से विख्यात था। बुद्ध ने कुशीनगर को प्राचीन कुशावती से अभिहित किया था। कुशीनगर प्राचीन भारत के तत्कालीन 16 महाजनपदों में से एक मल्ल राज्य की राजधानी थी। कुशीनगर में अनेक सुंदर बौद्ध मंदिर है, जिस कारण यह एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल भी है, जहाँ विश्व के बौद्ध तीर्थ यात्री भ्रमण करने के लिए आते हैं। बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर कुशीनगर में एक माह का मेला लगता है। यद्यपि यह तीर्थ स्थल महात्मा बुद्ध से संबंधित है, किंतु आस पास का क्षेत्र हिंदू बहुल है। कुशीनगर बौद्ध केंद्र के साथ-साथ जैन धर्म का भी एक महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ पर जैन धर्म के 24वें तीर्थकर महावीर से जुड़ा है, जो कुशीनगर जिले के पावापुरी में है। जिसको वर्तमान में फाजिलनगर के नाम से जाना जाता है। कुशीनगर में बौद्ध धर्म के प्रमुख स्थल निम्न है-

1.**निर्वाण स्तूप**-

कुशीनगर में बौद्ध धर्म के विश्व स्तरीय प्रसिद्धि का प्रमुख केंद्र महात्मा बुद्ध का निर्माण स्तूप ही है। इसकी खोज का श्रेय कनीघम को जाता है।

2.**महापरिनिर्वाण मंदिर**-

कुशीनगर के पर्यटन केन्द्रों में महापरिनिर्वाण बिहार का विशेष स्थान है। यह बिहार वर्तमान में आकर्षण का केंद्र भी है। यहाँ पर भगवान बुद्ध की 6.10 मीटर लंबी अद्भुत प्रतिमा स्थापित है। इस प्रतिमा की विशेषता यह है की प्रतिमा को अलग अलग तीन कोणो से देखा जाए तो यह प्रतिमा तीनों ओर से अलग-अलग भाव प्रकट करते हुए प्रतीत होता है।

3.**रामाभार स्तूप**-

दुनिया भर के बौद्धो के लिए यह एक महान धार्मिक महत्व रखता है, क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि यह वही स्थान है जहाँ भगवान बुद्ध के निर्माण पश्चात उनके वरिष्ठ शिष्य महाकश्यप द्वारा अंतिम संस्कार किया गया था और 483 ईसा पूर्व उनकी मृत्यु के बाद उन्हें महापरिनिर्वाण मिला था। इस स्तूप का निर्माण मल्ल राजाओं ने किया था। स्थानीय वंशीदों के अनुसार रामाभार शब्द तालाब या उनके पास स्थित टीले से लिया गया है, स्तूप ईटो से बना है और 14.9 मीटर ऊंचा है।

4.**पावानगर**-

इसको वर्तमान में फजीलनगर के नाम से जाना जाता है यहीं पर जैन धर्म के 24वें तीर्थकर महावीर स्वामी जी का निर्माण भूमि है। जैन धर्म के अनुयायियों के लिए पावनगर आस्था का प्रमुख केंद्र है। मंदिर में मान स्तंभ और चार मूर्तियां हैं, कार्तिक पूर्णिमा को निर्माण महोत्सव का आयोजन होता है।

5.**चीनी मंदिर**-

यह मंदिर कुशीनगर के प्रवेश द्वार पर स्थित है। यह आधुनिक मंदिरों में से एक है यह चीनी और वियतनामी स्थापत्य डिजाइनों में निर्मित दो मंजिला संरचना है। मंदिर में रखी बुद्ध की मूर्ति पर्यटकों और तीर्थ यात्रियों के लिए आकर्षण का एक बड़ा केंद्र है।

6.**जापानी मंदिर –**

महापरीनिर्वाण स्तूप के पास स्थित यह कुशीनगर के प्रसिद्ध पर्यटक आकर्षणों में से एक है। यह अष्टधातु से बनी एक शानदार बुद्ध प्रतिमा है। मूर्ति को मूल रूप से जापान से लाया गया था।

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

7. **वाटकई मंदिर**-

इसका निर्माण काल 1904 के आसपास था। यह बौद्ध स्थापत्य कला शैली में किया गया था। इसका निर्माण बौद्ध अनुयायियों द्वारा दान से किया गया था। इस मंदिर का विशाल बागवानी प्रांगण जो एक स्वयं में मनोहरी दृश्य प्रकट करता है।

उद्देश्य एवं विधि तंत्र:-

प्रस्तुत शोध पत्र का निम्न उद्देश्य है -

1. कुशीनगर बौद्ध केंद्र का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक महत्व की विवेचना करना।

2. कुशीनगर में बौद्ध पर्यटन के विकास का अध्ययन करना।

3. बौद्ध परिपथ पर स्थित कुशीनगर का पर्यटन उद्योग में लोकप्रियता तथा महत्व का अध्ययन।

अध्ययन क्षेत्र में कुशीनगर बौद्ध स्थल के सांस्कृतिक, भौगोलिक एवं विकास के लिए अध्ययन संकल्पनात्मक एवं व्यवहारिक दोनों ही दृष्टियों से किया गया है। इस शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का संकलन किया गया है जो व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्म पद्धति पर आधारित है।

निष्कर्ष :–

कुशीनगर में स्थित बौद्ध केन्द्रो की सभ्यता एवं संस्कृति का भारत में एक अलौकिक पहचान है। भारतीय संस्कृति के अनुसार कुशीनगर में प्राचीन काल समय से भ्रमण, ज्ञान अर्जन एवं पर्यटन की परंपरा व्याप्त रही है। इसी क्रम में बौद्ध पर्यटन के रूप में कुशीनगर पर्यटन का स्वरूप एक अलग विशिष्ट एवं विविधता के लिए जाना जाता है। वर्तमान में कुशीनगर में पर्यटन उद्योग के आर्थिक विकास एवं रोजगार के सृजन का महत्वपूर्ण कारक है। भारत के अन्य पर्यटको के साथ कुशीनगर में भी विदेशी पर्यटकों का आगमन विगत वर्षो के अपेक्षा लगातार वृद्धि हो रही है, जिसके परिणाम स्वरुप विदेशी मुद्रा का स्वरूप निरंतर बढ़ रहा है। इस दिशा में स्पष्ट है कि भारत में बौद्ध धर्म के अनुयायियों में कुशीनगर का प्रथम स्थान है। वर्तमान में बौद्ध परिपथ पर स्थित बौद्ध केंद्र कुशीनगर का भौगोलिक आयाम इतना विकसित हो गया है कि निरंतर देश विदेश के पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है। इसके साथ ही निजी सहभागिता एवं सरकारी सहयोग से हिरण्यवती नदी के किनारे स्थित कुशीनगर को पर्यटन उद्योग के रूप में विकसित करने के लिए कसया बाईपास के पास करुणा सागर जलाशय बनाया गया है। इसके सुंदरीकरण के लिए बौद्ध घाट, शौचालय, बोटिंग एवं रात के समय लाइटिंग तथा पारिस्थितिक तंत्र को विकसित करने के लिए जल में जीव जंतु और तालाब के किनारे पेड़-पौधों को लगाने की योजना है। रामाधार स्तूप के पास अंत्येष्टि संस्कार रामाभार स्तूप स्थल के पास इस नदी ने पर्यटक को आकर्षित

करने के उद्देश्य से बौद्ध घाट नौका बिहार बनाया गया है। जिसके परिणाम स्वरूप यह स्थल आर्थिकी के आधार पर एक पर्यटन उद्योग के रूम में विकसित हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

दिव्यावदान पृष्ठ संख्या 152, 153, 194

तत्रेव, पृष्ठ 108

पाण्डेय, एस.के. (2005) प्राचीन भारत प्रयाग, एकेडमी, इलाहाबाद पृष्ठ संख्या 201-263

पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार की वेबसाइट www.tourism.gov.in

Singh, Rana P.B. (2003): Where the Buddha walked, A companion to the Buddhist places of india, Indica Books, Varanasi, Reprinted 2009

धामा, तेजपाल सिंह (2014), हमारे राष्ट्रीय विरासत स्थल सरस्वती ट्रस्ट नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 35

दीर्घ निकाय भाग-2 पृष्ठ संख्या 170-171

भरत सिंह उपाध्याय, बौद्ध काल का भारतीय भूगोल (प्रथम संस्करण) पृष्ठ संख्या 318

पर्यटन विभाग, बौद्ध क्षेत्र के विकास के लिए कार्य योजना: भारत सरकार नई दिल्ली, 1986